संस्कृति और खेल विकास-भाजपाई सोच

संस्कृति विकास का भाजपाई मॉडल

रोहतक (म.मो.) में शहर के बीचों बीच स्थित मानसरोवर पार्क के एक हिस्से में सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत पुराने समय में आयोजित होते रहे हैं। शहर के कलाप्रिय लोग़ों की लगातार मांग पर सरकार ने अभी हाल ही में वहां पर श्री राम रंगशाला नाम से एक केन्द्र तैयार किया था। इस भवन के बनने से शहर के सभी कला और संस्कृति प्रेमियों में एक उत्साह की लहर दौड़ गयी भी कि चलो शहर को अपना एक कला केन्द्र मिल गया। वैसे तो शहर की महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी में भी कई ऑडिटोरियम हैं लेकिन उनमें कोई लीक या रूढ़िवादी या कहें हिन्दुत्ववादी सोच से हटकर कोई कार्यक्रम करना आसान नहीं है। बाकायदा इजाजत लेकर कार्यक्रम आयोजित करने गये एक दलित संगठन को यूनिवर्सिटी से किस तरह मार-पीट कर भाजपा और आरएसएस ने भगा दिया था। या वह वाकया अभी पुराना नहीं हुआ है। ऐसे में एक स्वतंत्र स्थान मिलने पर संस्कृति कमियों में खुशी की लहर भी। इसीलिये उन्होंने पिछले हफ़्ते डी.सी. रोहतक से मिलकर आग्रह किया कि यह केन्द्र सांस्कृतिक गतिविधियों के लिये तुरन्त जनता को सौंप दिया जाये। डी.सी. साहब ने इस पर सहमति भी जाहिर कर दी थी। लेकिन सारी संस्कृति की ठेकेदार भाजपा को यह कैसे मन्जुर हो सकता था। सो अगले ही दिन यानि आठ अगस्त को सरकारी घोषणा की गई कि सहकारिता राज्य मन्त्री मनीष ग्रोवर का कैम्प कार्यालय इस भवन के पहले तल पर खोला जायेगा और उसके लिये स्टाफ़ की नियुक्ति की जा रही है। स्पष्ट था कि यह सब भाजपा द्वारा इस केन्द्र को कब्जाने की कोशिश थी। क्योंकि संस्कृति के एकमात्र ठेकेदार तो वही है ।लेकिन जैसे ही लोगों को इस खबर का पता चला उन्होंने इसका पुराजोर विरोध किया और डी.सी. साहब को तुरन्त एक ज्ञापन देकर इस केन्द्र में कोई भी दफ़्तर खोलने का विरोध किया। उधर संस्कृति के भाजपाई ठेकेदार मनीष ग्रोवर ने सफ़ाई दी है कि उन्होंने तो अस्थायी तौर पर यहां अपना कैम्प कार्यालय खोला है और जैसे ही उनका स्थायी कार्यालय तैयार हो जायेगा वे यहां से खाली कर देंगे। लेकिन जुमलेबाज़ों की पार्टी के किसी भी आश्वासन पर लोगों को अब कम ही विश्वास होता है।

खेलों में भाजपा मॉडल

फ़रीदाबाद (म.मो.) भारत की एकमात्र जिमनास्ट जिसने ओलम्पिक में फ़ाइनल मुकाबले में अपनी जगह बनायी वह अगरतल्ला (त्रिपुरा) की दीपा कर्मकार (करमाकर है) दीपा ने ट्रेनिंग के दौरान एक फ़िजियोथेरेपिस्ट की जरूरत महसूस की जिसे 'साई' (प्राधिकरण) ने स्पष्ट रूप से नकार दिया था। लेकिन अब जबकि दीपा ने अपने लिये एक गौरवशाली जगह बना ली है तो ना सिर्फ़ हवाई जहाज से उसके लिये एक 'फिजियो' को रियो रवाना कर दिया गया बल्कि पुरानी फ़ाईल को भी झाड़-पोंछकर उसमें लिखी ना को मिटाकर हां करने की तैयारी कर ली गई है ताकि दीपा की सारी मेहनत का क्रेडिट लिया जा सके। शायद ये भी भाजपा की इतिहास बदलने की मुहिम का एक हिस्सा है। इसी तरह से अन्य क्षेत्रों में भी भाजपा अपने ''गौरवशाली'' इतिहास को सामने लाती ही रही है। उधर महिला धावक दूतीचन्द ने भी रोष व्यक्त किया कि रियो जाने के लिये उसे तो इकनामी क्लास में ठूंस दिया गया जबकि तमाम सरकारी लबड़गट्टू फर्स्ट क्लास में बैठ कर गये। ध्यान रहे कि रियो जाने में दूती को 36 घंटे का समय लगा था और असुविधा जनक स्थितियों में इतने घंटे सफ़र करने से खिलाड़ी की क्षमता प्रभावित होती है। ध्यान रहे कि खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों का दैनिक भत्ता भी इन जोंकों से आधा होता था। इससे पहले खिलाड़ियों का 50 डॉलर और अधिकारियों का 100 डॉलर प्रति दिन होता था। जिसे मोदी ने नेशनल सटेडियम में रियो के लिये हुए विदाई समारोह में दोनों का बराबर कर दिया था। सवाल यह उठता है कि हमारी टीमें खिलाड़ियों को खिलवाने के लिये जाती है कि अफ़सरों की अय्याशी के लिये ? क्या 'प्रधान सेवक' जी इस पर भी ध्यान देंगे ?

आत्म मुग्धता

किसी का किसी पर मुग्ध हो जाना सामान्य बात मानी जा सकती है परन्तु यदि कोई अपने आप पर ही मुग्ध हो जाये तो इसे सामान्य बात नहीं माना जा सकता है।

आत्ममुग्धता क्या चीज़ होती है इसको यदि किसी को समझना हो तो वह उन क्षणों को याद कर सकता है जब हमारे देश के प्रधानमंत्री अपने ही मोम के पुतले के सामने खड़े थे। आत्मविभोर हुए प्रधानमंत्री शायद कलाकार के करिश्मे पर उतने फ़िदा नहीं थे जितने की अपने आप पर। आंखों में ऐसी चमक थी मानो कोई साक्षात परमात्मा से मिल रहा हो।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आत्ममुग्धता के ऐसे कई दृश्य पिछले दो वर्ष में हमारी आंखों के आगे से गुजरे हैं। 'सेल्फ़ी' लेने के उनके अन्दाज और उसके प्रचार से, अंध समर्थकों को छोड़ दिया जाये तो हर कोई आश्चर्य में पड़ सकता है। क्यों देश का प्रधानमंत्री इस कदर आत्ममुग्ध है।

नरेन्द्र मोदी यदि आत्ममुग्धता के चरम हैं तो ढेरों और भी राजनेता हैं जो इस बीमारी के शिकार हैं। बहन मायावती ने तो अपने जीते जी अपनी ही प्रतिमाएं स्थापित करवा दीं। दक्षिण भारत के ढेरों राजनेता भी कुछ-कुछ ऐसा ही करते रहे हैं। कोई कह सकता है कि यह बीमारी नयी है। पुराने राजनेताओं में ऐसी चीज़ देखने को नहीं मिलती थी। यह कहा जा सकता है कि इस बीमारी का प्रभाव पहले कम था परन्तु इसकी शुरूआत भारत में आजादी के तुरंत बाद ही हो गयी थी। जवाहर लाल नेहरू ने तो स्वयं को ही 'भारत रत्न' दे डाला था। उन्हें शायद अपने से बड़ा कोई 'भारत रत्न' दिखाई ही नहीं दिया होगा।

आत्म मुग्धता उन लोगों में पैदा होना स्वाभाविक है जो सत्ता के शीर्ष पर बैठे हों। यह उन लोग़ों में पैदा होना भी स्वाभाविक है जो इस समाज में सफलतम व्यक्ति हों, स्टार हों। परन्तु यह रोग सत्ता के शीर्ष से नीचे तक प्रवाहित होता जाता है। आधुनिक तकनीक ने इस कदर आसान बना दिया है कि हर कोई अपन 'सेल्फ़ी' लेकर अपनी ही सूरत, अपनी ही अदा पर फ़िदा हो सकता है। ऐसे किस्मत के मारों की 'सेल्फ़ी' को यदि कुछ 'लाइक' मिल गये तो बेचारों को उस ऊंचाई में पहुंचने में चन्द सेकण्ड भी नहीं लगेंगे जहां से उन्हें अपने अलावा कुछ नहीं दिखाई देगा।

आत्म मुग्धता जगत विस्मृति का दूसरा रूप है। आत्म मुग्ध व्यक्ति श्रेष्ठता के मूल्यों का शिकार होता है। वह अपनी प्रतिभा, अपनी क्षमता, अपने व्यक्तित्व, अपने रूप-रंग आदि का सबसे बड़ा और हो सकता है एकमात्र प्रशंसक ही।

आत्म मुग्ध व्यक्तियों से हमारा समाज भरा पड़ा है। और आगे यह भी कह सकते हैं कि पूरी दुनिया में यह बीमारी आम है। सवाल यह उठता है कि क्यों हमारे समाज में ऐसे व्यक्ति तैयार हो रहे हैं। क्यों यह बीमारी बढ़ती ही जा रही है।

इस प्रश्न का जवाब हमारी समाज व्यवस्था के पूंजीवादी चरित्र में और उसके लगातार अपने पतन की ओर बढ़ते जाने में छुपा है।

पूंजीवादी समाज का चरित्र ऐसा है कि यह व्यक्तियों में निरन्तर अलगाव को बढ़ाता जाता है। इस अलगाव की ज़ड़ें श्रम के अपने उत्पाद से अलगाव में हैं। श्रमिकों और अन्य मेहनतकशों का अपने श्रम के उत्पाद पर अधिकार नहीं होता। अधिकार उसका होता है जो अपनी पूंजी के दम पर श्रमिकों से उत्पादन करवाता है। पूंजी ही क्योंकि समाज का संचालन कर रही होती है तो पूंजीपति अपने आपको समाज का संचालक समझता है। और जिसके पास जितनी पूंजी उसके पास उतनी ताकत। उतना ही बड़ा उसका व्यक्तित्व । उतना ही श्रेष्ठता बोध। और दूसरे शब्दों में उतनी ही आत्ममुग्धता। 'एकोअम् द्वितीयो नास्ति न भूतो: न भविष्यति' रावण की अहंकारी घोषणा पूंजीवादी समाज में हर पूंजीपति का व्यक्तिगत घोषणा पत्र बन जाता है। आत्ममुग्धता इस घोषणापत्र की आत्मा है।

पूंजीवादी व्यवस्था के शीर्ष पर बैठे व्यक्तियों में, आत्ममुग्धता अपने चरम पर होती है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जिन्होंने 'अपने दम पर' वर्षों से सत्ता से दूर, संगठन पार्टी को विजय दिलायी हो तो वह भला अपने पुतले पर मोहित क्यों न हों। क्यों न उसकी जमाने भर में नुमाइश हो। क्यों न वे नरसिस (आत्मपूजक) बनें।

एक बांग्ला कहावत है कि मछली सदैव अपने सिर से सड़ती है। यही कहावत हमारे समाज पर भी इस मामले में चरितार्थ होती है। सिर की सड़न शरीर के अन्य अंगों पर भी पहुंचती चली गयी है। देश के हर गली-कूचे में आत्म मुग्ध लोगों की भीड़ देखी जा सकती है।

आत्म गुग्धता का दूसरा छोर आत्महीनता है। श्रेष्ठता बोध का दूसरा सिरा हीनता बोध है। पूंजी से जन्म लेने वाला और निरंतर पल्लवित होने वाला व्यक्तित्व इसके अभाव में, पूंजी के अभाव में कुछ भी नहीं है। सर्वहारा है।

पूंजीवादी समाज में उस व्यक्ति पर कोई मुग्ध नहीं हो सकता जिसके पास पूंजी नहीं है। यहां तक वह व्यक्ति भी इस जगह पर खड़ा नहीं हो सकता है कि वह खुद पर मुग्ध हो। अमीरों की बीमारी का कुछ प्रभाव उस पर हो सकता है परन्तु आत्म मुग्ध होने के लिये न उसके पास पैसा होता है, न समय और न अवकाश। वह तो इस समाज में 'कुछ भी नहीं है'।

''कुछ भी नहीं'' से ''कुछ'' बनने की यात्रा समाज के मज़दूरों, किसानों के लिए एक क्रांतिकारी यात्रा है। और इस यात्रा को वे अकेले-अकेले पूरा नहीं कर सकते। यह यात्रा एक सामूहिक है। यह यात्रा पूंजीवादी समाज के विनाश और नये समाज को बनाने की यात्रा है। यहां आत्म मुग्धता का कोई स्थान नहीं है। यह कदम-कदम पर ''आत्म विस्मृति'' और एक नये समाज के निर्माण के लिये जगत स्मृति और आत्म बलिदान है। यह ''कुछ नहीं'' से ''कुछ'' अर्थात् इंसान बनने के लिये आत्म मुग्धों से संघर्ष है। इस जमीन को खत्म करने का संघर्ष है जो आत्ममुग्धता को पैदा करती है। यह संघर्ष ऐसा समाज सामने लाने के लिये है जहां व्यक्ति समूह पर शासन नहीं करता बल्कि समूह के लिये बन जाता है। व्यक्ति समूह का जगमगाता अंश बन जाता है।

-नागरिक

यूपी चुनाव : गाय, दंगा और दलित

- मनोज कुमार झा

भारतीय जनता पार्टी और मोदी सरकार के लिए अब गाय मुसीबत बन गई है। ऐसी ख़बरें आईं हैं कि आरएसएस के अपने सर्वे में भाजपा यूपी चुनाव में चौथे नंबर पर आती दिख रही है। पंजाब में तो सूपड़ा साफ होने की नौबत है। गुजरात में भी हाहाकार की स्थिति बनी हुई है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि अभी गुजरात में चुनाव हों तो भाजपा चारों खाने चित हो जाएगी। गुजरात में स्थिति गंभीर होने के कारण मोदी-अमित शाह और आरएसएस के रणनीतिकारों ने जल्दबाजी में आनंदीबेन का इस्तीफा लिया और संघ के परम प्रिय विजय रूपाणी को सत्ता सौंपी, जबकि आनंदीबेन ऐसा नहीं चाहती थीं। उन्होंने अमित शाह पर अपने खिलाफ साजिश करने का आरोप लगाया। बहरहाल, दलित आन्दोलन अब वहां क्या शक्ल लेगा, यह देखने की बात होगी। पर आरएसएस और मोदी ने गौरक्षा दलों के गठन का आह्वान किया था। यानी बजरंग दल की तरह एक और बड़ा गुंडा दल। यह सब सुनियोजित तौर पर उत्तर प्रदेश में चुनावी लाभ के लिए किया गया था। राममंदिर के नाम पर अब वहां वोट नहीं लिए जा सकते। तो ज़रूरत थी गौरक्षा के नाम पर कुछ दंगे-फसाद करके हिंदू वोटों को गोलबंद करने की। इसके लिए गौरक्षा दलों का गठन किया गया। आरएसएस के पास ट्रेनिंग पाए गुंडों की कोई कमी नहीं है। उन्हें तो इशारा मिलना चाहिए। दंगे होते हैं तो लूटपाट कर पर्याप्त धन इकट्ठा कर लेते हैं और औरतों की अस्मत भी लूटते हैं। उन्हें तो मौका चाहिए। यह मौका प्रधानमंत्री मोदी, भाजपा अध्यक्ष अमित शाह और आरएसएस का नेतृत्व उन्हें देता रहा है। बजरंग दल में सारे छंटे हुए गुंडे थे, जिन्होंने गोधरा कांड के बाद जबरदस्त दंगे फैलाए और उत्पात किया।

रावण के तो बस दस सिर थे, इस आरएसएस के न जाने कितने सिर हैं। लेकिन दांव उलटा पड़ गया। गौरक्षा दल के गुंडे दलितों पर पिल पड़े जो सैकड़ों वर्षों से मरे पशुओं की खाल उतारा करते हैं। मुसलमान ये काम नहीं करते। देश में गौमांस का कारोबार मुसलमानों के अलावा संगठित रूप से हिंदू व्यवसायी भी ये काम करते हैं। अधिकांश बूचडखानों के मालिक हिंदू हैं, जिनमें एक संगीत सोम भी है। मोदी सरकार को कार्यकाल में गौमांस का कारोबार बढ़ा है, उसका निर्यात बढ़ा है, इसे कोई झुठला नहीं सकता। लेकिन इस सरकार ने दंगों का माहौल बनाने के लिए और गाय का इस्तेमाल मुसलमानों के खिलाफ करने के लिए दादरी हत्याकांड को अंजाम दिया। एक निर्दोष की हत्या शक के बिना पर की गई। पर इसका लाभ कुछ नहीं मिला। ये काम चुनाव के पहले ही हो गया। अब चुनाव सिर पर है तो फिर गाय का सहारा है। लेकिन इस बार भी दांव उलटा पड़ गया। निशाना मुसलमानों पर साधना था, आ गए दलित और वह भी गुजरात में। अति उत्साह में ऐसा होता है। अगर आप गुंडों को संगठित करते हैं और उनसे फायदा उठाना चाहते हैं तो कभी वे नुकसान भी पहुंचा सकते हैं। गुजरात में गौरक्षा दलों के गुंडों ने जब दलितों को बुरी तरह से पीटा तो इसका खामियाजा अब यूपी में भुगतना ही पड़ेगा। भाजपा को जरूरत थी गाय के बहाने यूपी में कुछ और दादरी कांड करने की, हो गया क्या? भूलना नहीं होगा, गौरक्षा दलों के गठन का प्रधानमंत्री मोदी ने ही आह्वान किया था। लेकिन देश में गायों की जो हालत है, वो कोई भी देख सकता है। राजस्थान और मध्य प्रदेश में जहां भाजपा की सरकारें हैं, वहां गौशालाओं में सैकड़ों की संख्या में गायें उचित देखभाल और पोषण के अभाव में मर गईं। उस पर गोरक्षकों ने कुछ नहीं कहा, न उनके संरक्षक मोदी और आरएसएस ने। क्या इन्हें नहीं पता कि गौमांस निर्यात का भारतीय अर्थव्यवस्था में कितना योगदान है। दूसरी बात, भारत में गौमांस की खपत कम है, ज्यादा निर्यात होता है। लेकिन आरएसएस को तो गाय दंगा कराने के लिए चाहिए। इसलिए गौरक्षा दल बनाए, जैसे आरएसएस में आतताई संगठनों की कमी हो गई थी। अब जब पानी नाक पर से ऊपर बहने लगा और आरएसएस के गौरक्षक काबू से बाहर हो गए तो प्रधानमंत्री को कहना पड़ा कि दलितों को न मारो, मुझे ही गोली मार दो। क्या अहमकाना है। क्या दलितों पर जुल्म ढाने वालों पर कार्रवाई के लिए कानून नहीं है। क्या दलित इतने भोले हैं कि वे मोदी की चाल में फंस जाएंगे। क्या लोग ये समझ नहीं गए कि ये आदमी हमेशा जुमले बकता है और इसकी कोई बात गंभीरता से लेने लायक नहीं है। गौरक्षक मोदी को गोली क्यों मारेंगे, उन्हें तो गाय के बहाने मुसलमानों पर हमला करने के लिए संगठित किया गया था। वे ये काम करते, पर मुसलमान तो गायों को नहीं मारते, न उनकी खाल उतारते हैं, ये काम दलित करते हैं तो गौरक्षकों के निशाने पर आ गए। ये गोरक्षक इतने बड़े आततायी हैं कि उन पर मोदी की इस बात का भी कोई असर नहीं पड़ा कि दलितों को मत मारो, मुझे मारो। इसके बाद भी उन्होंने हैदराबाद में कुछ दलितों की पिटाई की जो मरे पशुओं की खाल उतार रहे थे। ये गौरक्षक गुंडे सड़कों पर घूमते हैं और जहां इन्हें शक होता है कि कोई मरा पशु या मांस-खाल लेकर जा रहा है तो उसे गौमांस घोषित कर मारपीट और दंगा शुरू कर देते हैं। इन्होंने दादरी कांड को अंजाम दिया जिसमें एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या की गई और हत्यारों का कुछ भी नहीं बिगड़ा, क्योंकि उन्हें सरकार का संरक्षण हासिल था अब ये डैमेज कंट्रोल की कोशिश में लगे हैं। पर यह संभव नहीं है। आरएसएस के पास कोई मुद्दा नहीं जिसे वह यूपी चुनाव में भुना सके। एक गाय हाथ लगी थी, वो भी गई। दलित भड़क गए अलग से और वो भी हिंदुत्व की महान प्रयोगशाला गुजरात में। जहां तक यूपी का सवाल है, वहां दलित वोटबैंक भाजपा का है ही नहीं। यह वोटबैंक दलितों की महारानी ये देवी जो कहें, मायावती का है। गौरक्षकों द्वारा दलितों के उत्पीड़न से मायावती को भाजपा के खिलाफ प्रचार का अच्छा मौका हाथ लगा है। लेकिन फिर भी आरएसएस हिंदू वोटों को गोलबंद करने के लिए चुनाव के ऐन पहले उकसावापूर्ण कार्रवाई कर सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। आरएसएस ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश को दंगा क्षेत्र बनाने की कोशिश की है। उसका सरमाया यही है। दंगा करवाओ और वोट बटोरो, मुसलमानों का भयादोहन करो, यही एकमात्र नीति है। जहां तक गाय का सवाल है, आरएसएस के गौरक्षा अभियान के बारे में हरिशंकर परसाई ने बहुत पहले ही लिखा था कि दुनिया में गाय दूध देने के काम आती है, पर अपने देश में यह दूध देने के अलावा दंगा कराने के काम भी आती है।